अध्याय

2 मानव संसाधन

अस्पतालों में गुणवत्तापूर्ण स्वास्थ्य सेवा प्रदान करना काफी हद तक मानव बल विशेषकर चिकित्सा अधिकारियों (एमओ)/ विशेषज्ञों, स्टाफ नर्सों और पैरा-मेडिकल स्टाफ के संवर्ग की पर्याप्त उपलब्धता पर निर्भर करती है। इसके अलावा, मेडिकल कॉलेज में स्नातक (यूजी) पाठ्यक्रम, साथ ही स्नातकोत्तर (पीजी) पाठ्यक्रम चलाने के लिए एमसीआई/ एनएमसी से मान्यता प्राप्त करने के लिए पर्याप्त संकाय की उपलब्धता सबसे महत्वपूर्ण मानदंडों में से एक है। राज्य सरकार ने चिकित्सा की वैकल्पिक प्रणालियों को बढ़ावा देने के उद्देश्य से, आयुष औषधालयों के लिए एमओ और सहायक कर्मचारी तथा आयुष शैक्षणिक संस्थानों के लिए संकाय को भी मंजूरी दी है।

2.1 राज्य में मानव संसाधनों की कमी

झारखण्ड राज्य जिला अस्पतालों (डीएच), अनुमंडलीय अस्पतालों (एसडीएच), सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्रों (सीएचसी), प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्रों (पीएचसी) आदि में चिकित्सा अधिकारियों (एमओ), स्टाफ नर्सों और पैरामेडिक्स की भारी कमी का सामना कर रहा है। लेखापरीक्षा के दौरान एमओ, स्टाफ नर्स और पैरामेडिक्स की भारी रिक्तियां देखी गईं, जैसा कि अगले पैराग्राफ में चर्चा की गई है।

- **राज्य में एमओ/विशेषज्ञों की उपलब्धता की स्थिति**

राज्य में 3,634 एमओ/विशेषज्ञों के स्वीकृत पदों के विरुद्ध 2,210 (61 प्रतिशत) पद रिक्त थे, जैसा कि **तालिका 2.1** और **चार्ट 2.1** में दिखाया गया है।

तालिका 2.1: मार्च 2022 तक राज्य में चिकित्सा अधिकारियों/विशेषज्ञों की जिलेवार स्वीकृत बल और उपलब्ध मानव बल

क्रम सं.	जिला का नाम	स्वीकृत बल	कार्यरत बल	कमी	कमी (प्रतिशत में)
1	बोकारो	201	70	131	65
2	चतरा	129	38	91	71
3	देवघर	137	59	78	57
4	धनबाद	171	69	102	60
5	दुमका	194	73	121	62
6	पूर्वी सिंहभूम	154	72	82	53
7	गढ़वा	191	42	149	78
8	गिरिडीह	188	73	115	61
9	गोड्डा	132	39	93	70
10	गुमला	151	49	102	68
11	हजारीबाग	189	73	116	61

क्रम सं.	जिला का नाम	स्वीकृत बल	कार्यरत बल	कमी	कमी (प्रतिशत में)
12	जामताडा	98	35	63	64
13	खुंटी	96	57	39	41
14	कोडरमा	109	35	74	68
15	लातेहार	111	35	76	68
16	लोहरदगा	92	45	47	51
17	पाकुड	103	35	68	66
18	पलामू	230	65	165	72
19	रामगढ	94	51	43	46
20	राँची	260	206	54	21
21	साहेबगंज	138	46	92	67
22	सरायकेला-खरसावाँ	123	56	67	54
23	सिमडेगा	119	24	95	80
24	प. सिंहभूम	224	77	147	66
	कुल	**3,634**	**1,424**	**2,210**	**61**

(स्रोतः विभाग द्वारा उपलब्ध करायी गयी सूचनाएँ)

चार्ट 2.1: जिलेवार चिकित्सा अधिकारियों/विशेषज्ञों की कमी (प्रतिशत)

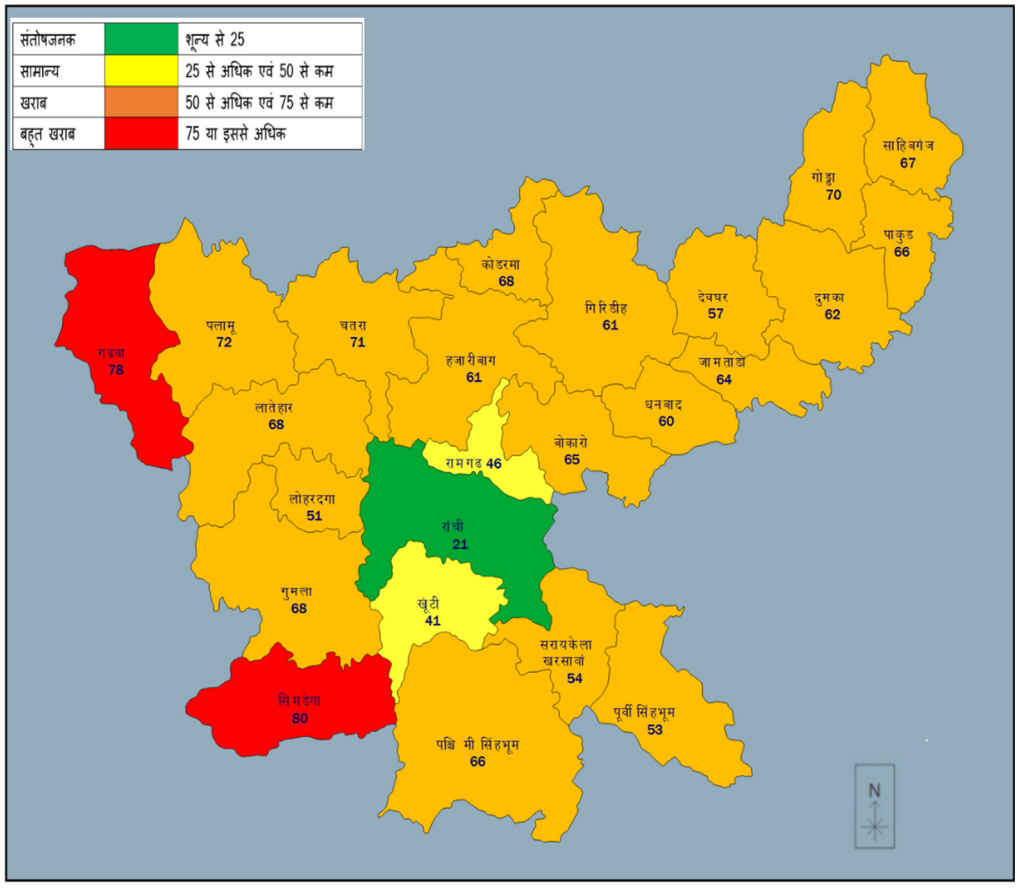

- **स्टाफ नर्सों की उपलब्धता की स्थिति**

राज्य में 5,872 स्टाफ नर्सों के स्वीकृत पदों के विरुद्ध 3,033 (52 प्रतिशत) पद रिक्त थे, जैसा कि **तालिका 2.2** में दिखाया गया है।

तालिका 2.2: मार्च 2022 तक राज्य में स्टाफ नर्सों के स्वीकृत पद और कार्यरत बल

क्रम सं.	जिला का नाम	स्वीकृत बल	कार्यरत बल	कमी	कमी (प्रतिशत में)
1	बोकारो	219	99	120	55
2	चतरा	181	70	111	61
3	देवघर	256	174	82	32
4	धनबाद	278	145	133	48
5	दुमका	390	188	202	52
6	पूर्वी सिंहभूम	330	178	152	46
7	गढ़वा	232	116	116	50
8	गिरिडीह	304	115	189	62
9	गोड्डा	197	47	150	76
10	गुमला	330	130	200	61
11	हजारीबाग	206	107	99	48
12	जामताडा	188	97	91	48
13	खुंटी	165	55	110	67
14	कोडरमा	124	47	77	62
15	लातेहार	168	84	84	50
16	लोहरदगा	127	50	77	61
17	पाकुड	166	56	110	66
18	पलामू	270	128	142	53
19	रामगढ	108	36	72	67
20	राँची	467	401	66	14
21	साहेबगंज	217	99	118	54
22	सरायकेला-खरसावाँ	242	109	133	55
23	सिमडेगा	264	93	171	65
24	प. सिहभूम	443	215	228	51
	कुल	**5,872**	**2,839**	**3,033**	**52**

- **राज्य में पैरामेडिक्स की उपलब्धता की स्थिति**

राज्य में पैरामेडिक्स के स्वीकृत 1,080 पदों के विरूद्ध 864 (80 प्रतिशत) पद रिक्त थे, जैसा कि **तालिका 2.3** में दर्शाया गया है।

तालिका 2.3: मार्च 2022 तक राज्य में पैरामेडिक्स की जिलेवार स्वीकृत बल और कार्यरत बल

क्र.सं.	जिला	स्वीकृत बल	कार्यरत बल	रिक्त्ति	कमी (प्रतिशत)
1	बोकारो	96	23	73	76
2	चतरा	30	0	30	100
3	देवघर	58	20	38	66
4	धनबाद	86	14	72	84
5	दुमका	47	5	42	89
6	प. सिंहभूम	37	0	37	100
7	गढ़वा	39	0	39	100
8	गिरिडीह	43	1	42	98

क्र.सं.	जिला	स्वीकृत बल	कार्यरत बल	रिक्ति	कमी (प्रतिशत)
9	गोड्डा	63	12	51	81
10	गुमला	34	6	28	82
11	हजारीबाग	28	11	17	61
12	जामताडा	41	11	30	73
13	खुंटी	34	7	27	79
14	कोडरमा	24	3	21	88
15	लातेहार	24	0	24	100
16	लोहरदगा	53	12	41	77
17	पाकुड	33	6	27	82
18	पलामू	33	2	31	94
19	रामगढ	14	1	13	93
20	राँची	94	47	47	50
21	साहेबगंज	59	15	44	75
22	सरायकेला-खरसावाँ	42	13	29	69
23	सिमडेगा	28	6	22	79
24	प. सिहभूम	40	1	39	98
	कुल	**1,080**	**216**	**864**	**80**

तालिका 2.1, 2.2 और 2.3 से देखा जा सकता है कि राज्य में एमओ/विशेषज्ञों, स्टाफ नर्सों और पैरामेडिक्स की कमी क्रमशः 21 से 80 प्रतिशत, 14 से 76 प्रतिशत और 50 से 100 प्रतिशत के बीच थी। स्वीकृत बल, पद पर कार्यरत बल और एमओ/विशेषज्ञों, स्टाफ नर्सों और पैरामेडिक्स की कमी का विवरण **चार्ट 2.2** में दिया गया है।

चार्ट 2.2: मार्च 2022 तक जिलावार स्वीकृत बल, कार्यरत बल और चिकित्सकों/विशेषज्ञों, स्टाफ नर्सों और पैरामेडिक्स की कमी

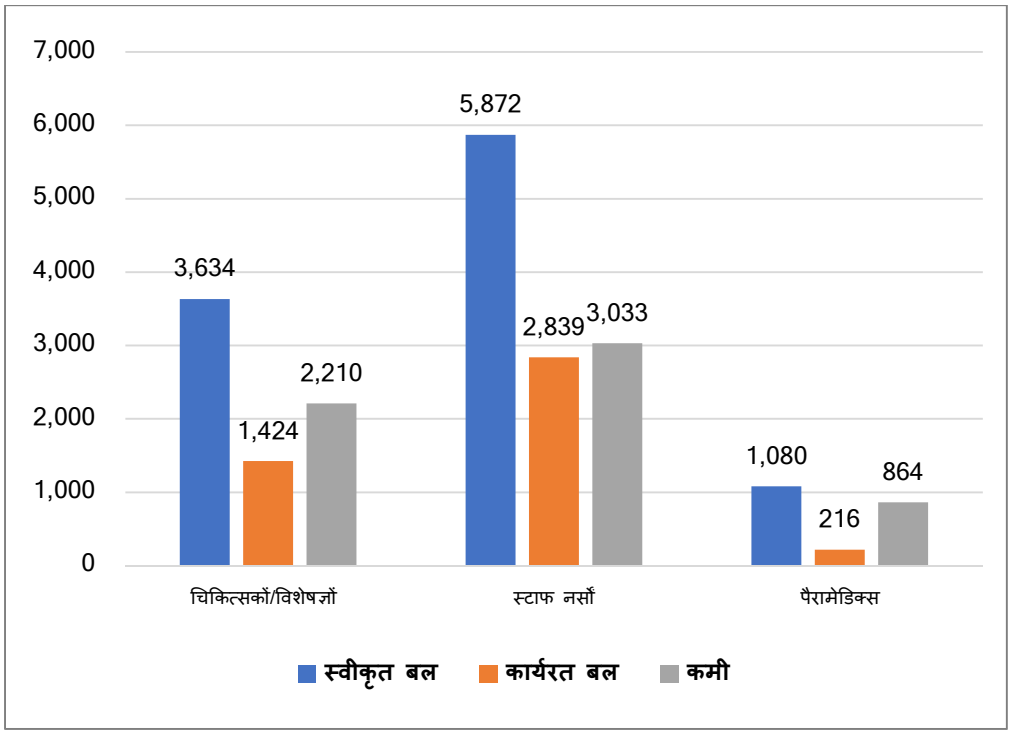

2.2 डीएच/ सीएचसी/ पीएचसी में मानव संसाधनों की उपलब्धता

आईपीएचएस में प्रावधानित है कि मरीजों को उचित चिकित्सा सुविधा प्रदान करने के लिए चिकित्सकों/विशेषज्ञों को चौबीसों घंटे उपलब्ध रहना चाहिए। आईपीएचएस डीएच/सीएचसी/पीएचसी में स्टाफ नर्स और पैरामेडिक्स के पदों के लिए मानदंड भी निर्धारित करता है।

लेखापरीक्षा जाँच से पता चला कि राज्य में डीएच, सीएचसी और पीएचसी में एमओ/विशेषज्ञों, स्टाफ नर्सों और पैरामेडिक्स की अत्यधिक कमी है, जो कि 7 से 65 प्रतिशत के बीच है, जैसा कि ***परिशिष्ट 2.1*** में दिखाया गया है। डीएच/सीएचसी/ पीएचसी में एमओ/विशेषज्ञों, स्टाफ नर्सों और पैरामेडिक्स की कमी की सारांशित स्थिति **तालिका 2.4** में दिखाई गई है।

तालिका 2.4: मार्च 2022 तक राज्य में स्वीकृत बल, कार्यरत बल और एमओ/विशेषज्ञों, स्टाफ नर्सों और पैरामेडिक्स की कमी

पद का प्रकार	स्वीकृत बल	कार्यरत बल	कमी *(प्रतिशत में)*
जिला अस्पताल			
चिकित्सा पदाधिकारी/ विशेषज्ञ	735	317	418 (*57*)
स्टाफ नर्स	790	806	-
पारामेडिक्स	447	415	32 (7)
सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र			
चिकित्सा पदाधिकारी/ विशेषज्ञ	1320	555	765(*58*)
स्टाफ नर्स	2069	1735	334 (16)
पारामेडिक्स	1071	573	498 (46)
प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र			
चिकित्सा पदाधिकारी/ विशेषज्ञ	822	294	528 (*64*)
स्टाफ नर्स	734	530	204 (28)
पारामेडिक्स	780	271	509 (65)

(स्रोत: विभाग के आंकड़े)

रंग कोड: हरा = अच्छा, पीला = खराब (रिक्ति <40%), लाल = बहुत खराब (रिक्ति ≥ 40%)।

यह भी देखा गया कि राज्य सरकार ने वित्तीय वर्ष 2016-17 से 2021-22 के दौरान 624 एमओ/विशेषज्ञों की भर्ती की थी।

• मार्च 2022 तक नमूना-जाँचित डीएच में एमओ/विशेषज्ञों, पैरामेडिक्स और स्टाफ नर्सों की कमी **तालिका 2.5** में दी गई है।

तालिका 2.5: स्वीकृत बल, कार्यरत बल और एमओ/विशेषज्ञ, पैरामेडिकल और स्टाफ नर्सों की कमी

जिला[10] अस्पताल	स्वीकृत बिस्तर	आईपीएचएस के अनुसार आवश्यक मानव बल			मार्च 2022 में कार्यरत बल			आईपीएचएस के अनुसार कमी (*प्रतिशत में*)		
		चिकित्सा पदाधिकारी/ विशेषज्ञ	पारामेडिक्स	स्टाफ नर्स	चिकित्सा पदाधिकारी/ विशेषज्ञ	पारामेडिक्स	स्टाफ नर्स	चिकित्सा पदाधिकारी/ विशेषज्ञ	पारामेडिक्स	स्टाफ नर्स
गढवा	100	32	31	45	11	19	23	21 (*66*)	12 (*39*)	22 (*49*)
गुमला	100	32	31	45	17	12	27	15 (*47*)	19 (*61*)	18 (*40*)
सरायकेला-खरसावाँ	100	32	31	45	17	19	21	15 (*47*)	12 (*39*)	24 (*53*)
सिमडेगा	100	32	31	45	13	8	27	19 (*59*)	23 (*74*)	18 (*40*)
कुल	**400**	**128**	**124**	**180**	**58**	**58**	**98**			

(स्रोत: नमूना-जाँचित जिला अस्पताल के अभिलेख)

रंग कोड: लाल = बहुत खराब (कमी ≥ 40%), पीला = खराब (कमी > 30 % लेकिन < 40%)।

तालिका 2.5 से देखा जा सकता है कि नमूना-जाँचित जिला अस्पताल(डीएच) में 47 से 66 प्रतिशत एमओ/विशेषज्ञों और 39 से 74 प्रतिशत पैरामेडिक्स और स्टाफ नर्सों की कमी थी।

• नमूना-जाँचित 14 सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्रों(सी एच सी) में डॉक्टरों और पैरामेडिक्स की कमी 18 से 82 प्रतिशत के बीच थी ***(परिशिष्ट 2.2)***। नमूना-जाँचित सात सीएचसी में 10 स्टाफ नर्सों के निर्धारित मानक के विरुद्ध 11 से 45 स्टाफ नर्स थीं, जबकि शेष सात नमूना-जाँचित सीएचसी में केवल दो से नौ स्टाफ नर्स थीं।

• नमूना-जाँचित 12 प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्रों (पीएचसी) में से केवल दो में मानदंडों के तहत निर्धारित दो चिकित्सक मौजूद थे। सात पीएचसी में एक-एक चिकित्सक उपलब्ध थे, जबकि शेष तीन पीएचसी में कोई चिकित्सक नहीं थे। पाँच पैरामेडिक्स के निर्धारित मानक के विपरीत, 10 पीएचसी में कोई पैरामेडिक्स नहीं था, जबकि दो पीएचसी में केवल एक पैरामेडिक था ***(परिशिष्ट 2.2)***। यह भी देखा गया कि तीन पीएचसी में तीन स्टाफ नर्स के निर्धारित मानक के विरुद्ध चार से पाँच स्टाफ नर्स थीं, जबकि शेष नौ नमूना-जाँचित पीएचसी में केवल एक से दो स्टाफ नर्स थीं।

नमूना-जाँचित स्वास्थ्य केंद्रों में स्टाफ नर्सों की असमान तैनाती के अलावा चिकित्सकों, पैरामेडिक्स और नर्सिंग स्टाफ की कमी के कारण सेवाओं के प्रदान करने में प्रतिकूल प्रभाव पड़ने की आशंका थी। विभाग ने तथ्यों को स्वीकार किया और कहा (मार्च 2023) कि विशेषज्ञों की भर्ती के लिए अधियाचना झारखण्ड लोक सेवा आयोग के पास दो वर्षों से अधिक समय से लंबित थी। यह भी कहा गया कि सरकार द्वारा भर्ती नियमों में बार-बार बदलाव के कारण मानव संसाधन की भर्ती में भी देरी हुई।

[10] डी.एच दुमका का विवरण कंडिका 2.4.1 में सम्मिलित किया गया है, क्योंकि इसे 2019 में फूलो झानों मेडिकल कॉलेज एवं अस्पताल (पीजेएमसीएच) में उत्क्रमित किया गया था।

2.3 डीएच/सीएचसी में विशेषज्ञों की कमी

आईपीएचएस ने बिस्तरों के क्षमता के आधार पर डीएच के लिए विशेषज्ञों के 21 पद निर्धारित किए हैं। नमूना-जाँचित जिला अस्पताल में मार्च 2022 तक विशेषज्ञों की स्थिति **तालिका 2.6** में दिखाई गई है:

तालिका 2.6: नमूना-जाँचित जिला अस्पतालों में विशेषज्ञों की आवश्यकता, कार्यरत बल और कमी का विवरण

जिला[11] अस्पताल	आईपीएचएस के अनुसार आवश्यक विशेषज्ञों की संख्या	उपलब्ध विशेषज्ञों की संख्या *(प्रतिशत में)*	अलग-अलग विशेषज्ञों की कमी का विवरण (विशेषज्ञों की संख्या में कमी)
गढ़वा	21	03 (*14*)	मेडिसिन (02), सर्जरी (01), प्रसूति एवं स्त्री रोग (02), बाल रोग (02), निश्चेतक (02), नेत्र रोग (01), हड्डी रोग (01), रेडियोलॉजी (01), पैथोलॉजी (01), त्वचा रोग (01), मनोरोग (01), माइक्रोबायोलॉजी (01), फोरेंसिक (01), आयुष (01) - **कुल कमी - 18**
गुमला	21	11 (*52*)	मेडिसिन (01), प्रसूति एवं स्त्री रोग (01), बाल रोग (01), निश्चेतक (02), रेडियोलॉजी (01), दंत रोग (01), माइक्रोबायोलॉजी (01), फोरेंसिक (01), आयुष (01) - **कुल कमी - 10** **आधिक्य** हड्डी रोग (01) **कुल आधिक्य - 01**
सरायकेला-खरसावाँ	21	09 (*43*)	**कमी** मेडिसिन (02), सर्जरी (01), बाल रोग (01), निश्चेतक (02), हड्डी रोग (01), त्वचा रोग (01), मनोरोग (01), माइक्रोबायोलॉजी (01), फोरेंसिक (01), आयुष (01) **कुल कमी -12** **आधिक्य** स्त्री एवं प्रसूति रोग . (01), दंत रोग (01) **कुल आधिक्य - 02**
सिमडेगा	21	06 (*29*)	**कमी** मेडिसिन (02), बाल रोग (01), निश्चेतक (02), नेत्र रोग (01), रेडियोलॉजी (01), पैथोलॉजी (01), ई एन टी (01), दंत रोग (01), त्वचा रोग (01), मनोरोग (01), माइक्रोबायोलॉजी (01), फोरेंसिक (01), आयुष (01) **कुल कमी -15**

***रंग कोड:** लाल = बहुत खराब (उपलब्धता ≤ 60%)*

तालिका 2.6 से देखा जा सकता है कि नमूना-जाँचित डीएच में विशेषज्ञों की कमी 48 से 86 प्रतिशत के बीच थी। नमूना-जाँचित किसी भी डीएच में एनेस्थीसिया, माइक्रोबायोलॉजी, फोरेंसिक विज्ञान और आयुष के विशेषज्ञ नहीं थे। अन्य डीएच में कमी के बावजूद, डीएच, गुमला और डीएच सरायकेला खरसावां में विशेषज्ञों की अत्यधिक तैनाती भी देखी गई।

[11] डी.एच दुमका का विवरण कंडिका 2.4.1 में सम्मिलित किया गया है, क्योंकि इसे 2019 में फूलो झानों मेडिकल कॉलेज एवं अस्पताल(पीजेएमसीएच) में उत्क्रमित किया गया था।

इसके अलावा, आईपीएचएस, सीएचसी में पाँच विशेषज्ञों[12] के लिए एक-एक पद निर्धारित करता है। परंतु, नमूना-जाँचित 14 में से 12 सीएचसी में कोई विशेषज्ञ नहीं था जबकि दो सीएचसी में केवल एक विशेषज्ञ (प्रसूति एवं स्त्री रोग विशेषज्ञ) ही उपलब्ध था।

जैसा कि अध्याय 3 में चर्चा की गई है, नमूना-जाँचित डीएच और सीएचसी में विशेषज्ञों की कमी/अनुपलब्धता विशेष स्वास्थ्य सेवा प्रदान करने में प्रतिकूल प्रभाव डाल सकती है। विभाग ने तथ्यों को स्वीकार किया और कहा (मार्च 2023) कि विशेषज्ञों की भर्ती के लिए अधियाचना झारखण्ड लोक सेवा आयोग के पास दो वर्षों से अधिक समय से लंबित था। यह भी कहा गया कि सरकार द्वारा भर्ती नियमों में बार-बार बदलाव के कारण भी मानव संसाधन की भर्ती में देरी हुई है।

- **डीएच/ सीएचसी में नेत्र रोग विशेषज्ञ/ नेत्र सहायक की उपलब्धता**

आईपीएचएस 2012, अस्पताल की बिस्तर क्षमता के अनुसार डीएच के लिए एक से दो नेत्र रोग विशेषज्ञों और नेत्र सहायकों की उपलब्धता और सीएचसी के लिए एक नेत्र सहायक की उपलब्धता निर्धारित करता है। नमूना-जाँचित डीएच में नेत्र विज्ञान प्रभाग में मानव बल की उपलब्धता **तालिका 2.7** में दी गई है।

तालिका 2.7: मार्च 2022 तक नेत्र विज्ञान में मानव बल की उपलब्धता

क्रम सं.	जिला अस्पतालों के नाम	नेत्र रोग विशेषज्ञ		नेत्र सहायक	
		आईपीएचएस के अनुसार आवश्यक	उपलब्ध	आईपीएचएस के अनुसार आवश्यक	उपलब्ध
1	दुमका	2	1	2	1
2	गढवा	1	0	1	1
3	गुमला	1	1	1	2
4	सरायकेला- खरसावाँ	1	1	1	1
5	सिमडेगा	1	0	1	0

रंग कोड: लाल = बहुत खराब (उपलब्ध नहीं), पीला = खराब (उपलब्धता = 50%), हरा = अच्छा (कमी = शून्य)

तालिका 2.7 से देखा जा सकता है कि नमूना-जाँचित केवल दो डीएच (गुमला और सरायकेला-खरसावां) में आवश्यक मानव बल उपलब्ध था। इसके अलावा, डीएच, दुमका में प्रत्येक दो की आवश्यकता के विरुद्ध केवल एक नेत्र रोग विशेषज्ञ और एक नेत्र सहायक उपलब्ध थे।

इसके अलावा, नमूना-जाँचित 14 सीएचसी में से चार[13] में नेत्र सहायक उपलब्ध नहीं थे।

- **नमूना-जाँचित डीएच/सीएचसी/पीएचसी में लैब तकनीशियन, पैथोलॉजिस्ट, रेडियोलॉजिस्ट (चिकित्सक), एक्स-रे तकनीशियन/रेडियोग्राफर की उपलब्धता**

आईपीएचएस 2012, अस्पताल की बिस्तर क्षमता के अनुसार, डीएच के लिए छः से 12 लैब तकनीशियन, एक से तीन पैथोलॉजिस्ट, एक से दो रेडियोलॉजिस्ट, दो से पाँच

[12] मेडिसिन, सर्जरी, बाल रोग विशेषज्ञ, निश्चेतक और प्रसूति एवं स्त्री रोग विशेषज्ञ।

[13] सीएचसी, जरमुंडी; सीएचसी, सरैयाहाट; सीएचसी, भरनो एवं सीएचसी, पालकोट

एक्स-रे तकनीशियन/रेडियोग्राफर की उपलब्धता निर्धारित करता है। इसके अलावा, आईपीएचएस, 2012, सीएचसी के लिए दो लैब तकनीशियनों और एक एक्स-रे तकनीशियन/रेडियोग्राफर की उपलब्धता भी निर्धारित करता है। पीएचसी के लिए एक लैब तकनीशियन की आवश्यकता होती है। नमूना-जाँचित डीएच/सीएचसी/पीएचसी में इन कर्मियों की उपलब्धता **तालिका 2.8** में दी गई है।

तालिका 2.8: मार्च 2022 तक लैब तकनीशियन, पैथोलॉजिस्ट, रेडियोलॉजिस्ट (चिकित्सक), एक्स-रे तकनीशियन और रेडियोग्राफर की उपलब्धता

जिला अस्पताल (05)			
विवरण	**आवश्यक**	**उपलब्ध**	**कमी *(प्रतिशत में)***
रेडियोलोजिस्ट	06	01	05 (83)
लैब तकनीशियन	36	25	11 (31)
एक्स-रे तकनीशियन/ रेडियोग्राफर	13	09	04 (31)
पैथोलोजिस्ट	07	02	05 (71)
सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र (14)			
लैब तकनीशियन	28	27	01 (4)
एक्स-रे तकनीशियन/ रेडियोग्राफर	14	04	10 (71)
प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र (12)			
लैब तकनीशियन	12	01	11 (92)

तालिका 2.8 से देखा जा सकता है कि नमूना-जाँचित डीएच में रेडियोलॉजिस्ट, लैब तकनीशियन, एक्स-रे तकनीशियन, पैथोलॉजिस्ट की कमी क्रमशः 83, 31, 31 और 71 प्रतिशत थी। इसके अलावा, नमूना-जाँचित सीएचसी में लैब-तकनीशियनों और एक्स-रे तकनीशियनों की कमी क्रमशः चार और 71 प्रतिशत थी। पीएचसी में लैब तकनीशियनों की कमी 92 प्रतिशत थी ***(परिशिष्ट-2.3)***।

- **प्रसूति सेवाओं में आवश्यक मानव संसाधन**

एमएनएच टूलकिट प्रसूति सेवाओं के लिए एक अस्पताल में प्रति माह औसतन 100 से 500 प्रसवों के आधार पर, ग्राहकों को गरिमा और गोपनीयता के साथ गुणवत्तापूर्ण सेवा प्रदान करने और गर्भावस्था, प्रसव और प्रसवोत्तर के दौरान सर्वोत्तम संभव देखभाल प्रदान करने के लिए मानव बल निर्धारित करता है। एमएनएच टूलकिट के अनुसार, मातृत्व सेवाओं के अंतर्गत आवश्यक मानव बल को **तालिका 2.9** में दर्शाया गया है।

तालिका 2.9: मातृत्व सेवाओं के अंतर्गत आवश्यक मानव बल

प्रति माह औसत प्रसव	चिकित्सक	सहायक कार्मिक	कुल
100-200	4	19	23
200-500	15	26	41

वित्तीय वर्ष 2016-17 से 2021-22 के दौरान पाँच नमूना-जाँचित डीएच में मातृत्व सेवाओं के लिए औसत मासिक प्रसव के आधार पर आवश्यकता के अनुरुप मानव बल की उपलब्धता, **तालिका 2.10** में दर्शाई गई है।

तालिका 2.10: मातृत्व आईपीडी में आवश्यकता के विरुद्ध मानव बल की उपलब्धता

विवरणी		दुमका	गढवा	गुमला	सरायकेला-खरसावाँ	सिमडेगा
औसत मासिक प्रसव		252	433	343	100	124
आवश्यक चिकित्सकों की संख्या		15	15	15	4	4
सहायक कार्मिकों की आवश्यकता		26	26	26	19	19
कुल आवश्यकता		**41**	**41**	**41**	**23**	**23**
क्रम सं.	**विवरणी**	**उपलब्ध मानवबल(प्रतिशत)**				
1	चिकित्सक	8 (53)	4 (27)	उपलब्ध नहीं	4 (100)	3 (75)
2	सहायक कार्मिक	25 (96)	10 (38)	उपलब्ध नहीं	9 (47)	6 (32)
	कुल उपलब्ध	**33 (80)**	**14 (34)**	उपलब्ध नहीं	**13 (57)**	**9 (39)**

(स्रोत: नमूना-जाँचित डीएच के अभिलेख)

रंग कोड: लाल = उपलब्धता <50%, पीला = उपलब्धता 50% से 75%, हरा = उपलब्धता 76% से 100% और नीला = उपलब्ध नहीं

लेखापरीक्षा ने देखा कि पाँच नमूना-जाँचित डीएच में सेवा-वार विशिष्ट मानव बल स्वीकृत नहीं की गई थी। हालाँकि, डीएच द्वारा दी गई सूचना के अनुसार, यह देखा गया कि डीएच, सरायकेला-खरसावां में प्रसूति आईपीडी में पर्याप्त चिकित्सक थे। डीएच, गुमला ने प्रसूति आईपीडी में मानव बल की उपलब्धता के बारे में जानकारी नहीं दी। अन्य तीन डीएच में, चिकित्सकों की कम तैनाती 25 से 73 प्रतिशत के बीच थी। आगे यह देखा गया कि नमूना-जाँचित चार डीएच में सहायक कर्मियों की कम तैनाती 4 से 68 प्रतिशत के बीच थी।

नमूना-जाँचित डीएच के मातृत्व वार्डों में मानव बल की कम तैनाती से संकेत मिलता है कि प्रसव संबंधी जटिलताओं के प्रबंधन, संतोषजनक नवजात देखभाल सुनिश्चित करने और अन्य मातृ स्वास्थ्य आपात स्थितियों के प्रबंधन के लिए उचित ध्यान नहीं दिया गया था।

2.4 चिकित्सा महाविद्यालयों में मानव संसाधनों की उपलब्धता

2.4.1 शैक्षणिक एवं गैर-शैक्षणिक स्टाफ की कमी

चिकित्सा महाविद्यालय में यूजी पाठ्यक्रमों के साथ-साथ पीजी पाठ्यक्रम चलाने के लिए एमसीआई/एनएमसी से मान्यता प्राप्त करने के लिए पर्याप्त शिक्षण और गैर-शिक्षण कर्मचारियों की तैनाती सबसे महत्वपूर्ण मानदंडों में से एक है।

झारखण्ड के छः[14] एमसीएच में जुलाई 2022 तक शिक्षण/गैर-शिक्षण कर्मचारियों की स्वीकृत संख्या (एसएस) और पद पर कार्यरत व्यक्तियों (पीआईपी) का विवरण ***परिशिष्ट 2.4*** में दिखाया गया है। शिक्षण और गैर-शिक्षण कर्मचारियों की पद-वार स्थिति का सारांश **तालिका 2.11** और **चार्ट 2.3** में दिखाया गया है।

[14] (1) एसएनएमएमसीएच, धनबाद (2) पीजेएमसीएच, दुमका (3) एसबीएमसीएच, हजारीबाग (4) एमजीएमएमसीएच, जमशेदपुर (5) एमआरएमसीएच, पलामू और (6) रिम्स, रांची।

तालिका 2.11: छः एमसीएच में शैक्षणिक और गैर-शैक्षणिक कर्मचारियों का स्वीकृत बल और कार्यरत बल

पद का नाम	स्वीकृत बल	जुलाई 2022 में कार्यरत बल	रिक्ति *(प्रतिशत)*
शैक्षणिक संवर्ग			
प्रोफेसर	191	96	95*(50)*
एसोसिएट प्रोफेसर	266	149	117*(44)*
सहायक प्रोफेसर	445	222	223*(50)*
कुल	**902**	**467**	**435*(48)***
गैर-शैक्षणिक संवर्ग			
ट्यूटर	202	95	107 *(53)*
सीनियर रेजिडेंट	439	260	179 *(41)*
कुल	**641**	**355**	**286 *(45)***

(स्रोतः विभाग द्वारा उपलब्ध करायी गयी सूचना)

चार्ट 2.3: छः एमसीएच में शिक्षण और गैर-शिक्षण कर्मचारियों का स्वीकृत बल और कार्यरत बल

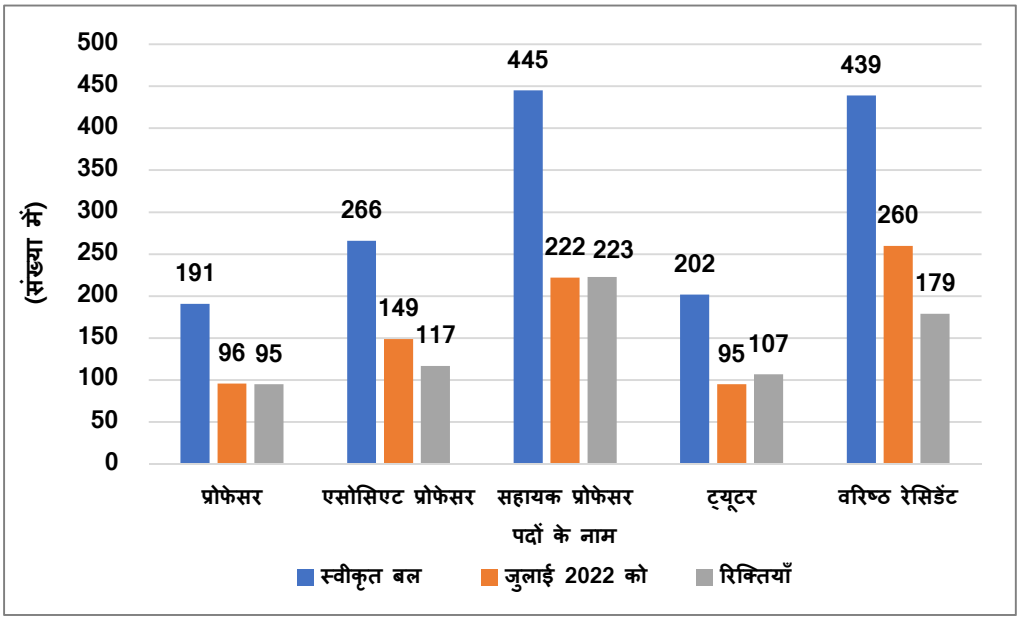

तालिका 2.11 और **चार्ट 2.3** से देखा जा सकता है कि शैक्षणिक और गैर- शैक्षणिक कर्मचारियों के स्वीकृत पदों के विरुद्ध रिक्तियाँ क्रमशः 48 और 45 प्रतिशत थीं। लेखापरीक्षा ने वित्त वर्ष 2016-17 से 2021-22 के दौरान नमूना-जाँचित एमसीएच ***(परिशिष्ट 2.5)*** में सभी पदों पर महत्वपूर्ण रिक्तियां देखीं, जैसा कि **तालिका 2.12** में दिखाया गया है।

तालिका 2.12: वित्तीय वर्ष 2016-17 से 2021-22 के दौरान रिक्तियां

एमसीएच का नाम	विभिन्न कैडर में रिक्ति प्रतिशत		
	शैक्षणिक (प्रोफेसर, एसोसिएट प्रोफेसर और सहायक प्रोफेसर)	गैर-शैक्षणिक(वरिष्ठ/ कनिष्ठ रेजिडेंट और ट्यूटर)	पारामेडिक्स
एसएनएमएमसीएच, धनबाद	54 से 69	26 से 56	54 से 94
पीजेएमसीएच, दुमका (2019-22)	67 से 72	69 से 75	45 से 82
रिम्स, रांची	34 से 51	17 से 38	45 से 53

तालिका 2.12 से देखा जा सकता है कि नमूना-जाँचित तीन एमसीएच में शैक्षणिक स्टाफ अर्थात प्रोफेसर, एसोसिएट प्रोफेसर और सहायक प्रोफेसर की कमी 34 से 72 प्रतिशत के बीच थे। इसके अलावा, गैर-शैक्षणिक कर्मचारियों अर्थात ट्यूटर्स और वरिष्ठ रेजिडेंट्स की संख्या में कमी 17 से 75 प्रतिशत के बीच थी, जबकि पैरामेडिक्स की कमी 45 से 94 प्रतिशत के बीच थी।

लगातार रिक्तियां, विशेष रूप से संकाय पदों में, न केवल एमसीआई/एनएमसी द्वारा पाठ्यक्रमों की मान्यता पर प्रतिकूल प्रभाव डालती हैं, बल्कि इन संस्थानों में प्रदान की जाने वाली चिकित्सा शिक्षा की गुणवत्ता से भी समझौता करती हैं। यह एमसीआई/एनएमसी द्वारा पाठ्यक्रमों को मान्यता न देने और सीटों का नवीनीकरण न करने का एक मुख्य कारण था।

इसका उल्लेख भारत के नियंत्रक-महालेखापरीक्षक के 31 मार्च 2015 को समाप्त वर्ष के लिए झारखण्ड सरकार के लेखापरीक्षा प्रतिवेदन की कंडिका संख्या 2.1.10 में एमसीआई अंडरग्रेजुएट वर्किंग ग्रुप 2010 की सिफारिशों के संबंध में अपने "विजन 2015 दस्तावेज़", में किया गया था जिसमें यह उल्लेख किया गया था कि चिकित्सा संस्थानों में शैक्षणिक कर्मचारियों की कमी को, उन सलाहकारों जिन्होंने सरकारी सेवा छोड़ दी है को सलाहकार समूह में शामिल करके, दोहरी/सहायक नियुक्तियाँ, अंतःविषय नियुक्तियाँ, संकाय विकास कार्यक्रम, अच्छी तरह से परिभाषित कैरियर पथ, सेवानिवृत्त शिक्षकों का रोजगार, सेवानिवृत्ति की आयु बढ़ाना और स्नातकोत्तर स्तर पर शिक्षकों की संख्या में वृद्धि के माध्यम से युवा शिक्षकों की संख्या को बढ़ा करके दूर किया जा सकता है।

हालाँकि, यह देखा गया कि राज्य सरकार ने कार्य समूह की तीन सिफारिशों यथा सेवानिवृत्ति की आयु 65 से बढ़ाकर 67 वर्ष (जनवरी 2018), अनुबंध के आधार पर संकाय की नियुक्ति (सितंबर 2021) और सरकारी सेवा विभागों में पदों का दोहन (दिसंबर 2021) पर देर से कार्रवाई की थी। इसके अलावा, एमसीआई कार्य समूह की शेष पाँच सिफारिशों पर मार्च 2022 तक स्वास्थ्य विभाग द्वारा कोई कार्रवाई नहीं की गई थी। परिणामस्वरूप, शैक्षणिक स्टाफ की कमी बनी रही। विभाग ने तथ्यों को स्वीकार किया और कहा (मार्च 2023) कि सहायक प्रोफेसरों की नियुक्ति की अधियाचना

जेपीएससी को भेजा गया है। सहायक प्रोफेसरों की पदोन्नति एसोसिएट प्रोफेसर के पद पर होने के कारण रिक्तियाँ बढ़ गई थी। इसलिए, इन पदों को भरने के लिए 2021 में चार बार संविदा के आधार पर प्रोफेसरों की नियुक्ति की प्रयास की गई, लेकिन कोई उम्मीदवार सामने नहीं आया।

2.4.2 स्वीकृत बल के विरूद्ध शैक्षणिक स्टाफ की अत्यधिक तैनाती

यह देखा गया कि, वित्तीय वर्ष 2016-17 से 2021-22 के दौरान, एसएनएमएमसीएच, धनबाद के पाँच विभागों में शैक्षणिक कर्मचारियों की अतिरिक्त तैनाती थी, जैसा कि **तालिका 2.13** में विस्तृत है।

तालिका 2.13: शैक्षणिक स्टाफ की अत्यधिक तैनाती

वर्ष	विभाग का नाम	पद	स्वीकृत बल	कार्यरत बल	आधिक्य
2016-17	प्रिवेंटिव एंड सोशल मेडिसिन (पीएसएम)	प्रोफेसर	01	02	01
2018-19	पैथोलोजी	प्रोफेसर	01	03	02
	माइक्रोबायोलोजी	एसोसिएट प्रोफेसर	01	02	01
	नेत्र रोग	एसोसिएट प्रोफेसर	02	04	02
	सामान्य सर्जरी	एसोसिएट प्रोफेसर	03	09	06
2019-20	सामान्य सर्जरी	एसोसिएट प्रोफेसर	03	07	04
2020-21	सामान्य सर्जरी	एसोसिएट प्रोफेसर	03	06	03
2021-22	सामान्य सर्जरी	एसोसिएट प्रोफेसर	03	06	03

(स्रोत: नमूना-जाँचित एमसीएच के अभिलेख)

शैक्षणिक स्टाफ की अधिक तैनाती का कारण/औचित्य प्रस्तुत नहीं किए गए। विभाग ने भी लेखापरीक्षा अवलोकन का उत्तर नहीं दिया।

अनुशंसा: राज्य सरकार एमसीआई वर्किंग ग्रुप की सभी सिफारिशों को लागू करने के लिए कदम उठा सकती है, ताकि शैक्षणिक कर्मचारियों की कमी को कम किया जा सके।

2.5 आयुष केन्द्रों में मानव संसाधन की उपलब्धता

स्वास्थ्य केन्द्रों में गुणवत्तापूर्ण स्वास्थ्य सेवा को प्रदान करना काफी हद तक मानव बल, विशेषकर चिकित्सकों, स्टाफ नर्सों, पैरामेडिकल और अन्य सहायक कर्मचारियों की पर्याप्त उपलब्धता पर निर्भर करती है।

लेखापरीक्षा ने आयुष केन्द्रों में चिकित्सकों और अन्य चिकित्सा कर्मचारियों की राज्यव्यापी कमी देखी, जैसा कि अगले कंडिका में चर्चा की गई है।

2.5.1 आयुष संस्थानों में शिक्षकों/कर्मचारियों की कमी

मार्च 2022 तक दो मौजूदा आयुष संस्थानों में स्वीकृत बल (एसएस) और कार्यरत बल (पीआईपी) **तालिका 2.14** और **चार्ट 2.4** में दर्शाया गया हैं।

तालिका 2.14: आयुष संस्थानों में स्वीकृत बल (एसएस) के विरुद्ध पद पर कार्यरत बल (पीआईपी) की स्थिति

संवर्ग	राज्य होमियोपैथिक महाविद्यालय, गोड्डा			राज्य आयुर्वेदिक फार्मेसी महाविद्यालय, साहेबगंज		
	स्वीकृत बल	कार्यरत बल	रिक्ति *(प्रतिशत)*	स्वीकृत बल	कार्यरत बल	रिक्ति *(प्रतिशत)*
शिक्षक	64	22	42 (*66*)	5	2	3 (*60*)
पारामेडिक्स	14	04	10 *(71)*	2	00	2 (*100*)
स्टॉफ नर्स	15	02	13 (*87*)	अनुपलब्ध	अनुपलब्ध	-
कुल	**93**	**28**	**65 (70)**	**7**	**2**	**5 (71)**

(स्रोत: आयुष निदेशालय द्वारा दी गई सूचना)

चार्ट 2.4: झारखण्ड में आयुष संस्थानों में मानव बल की स्थिति

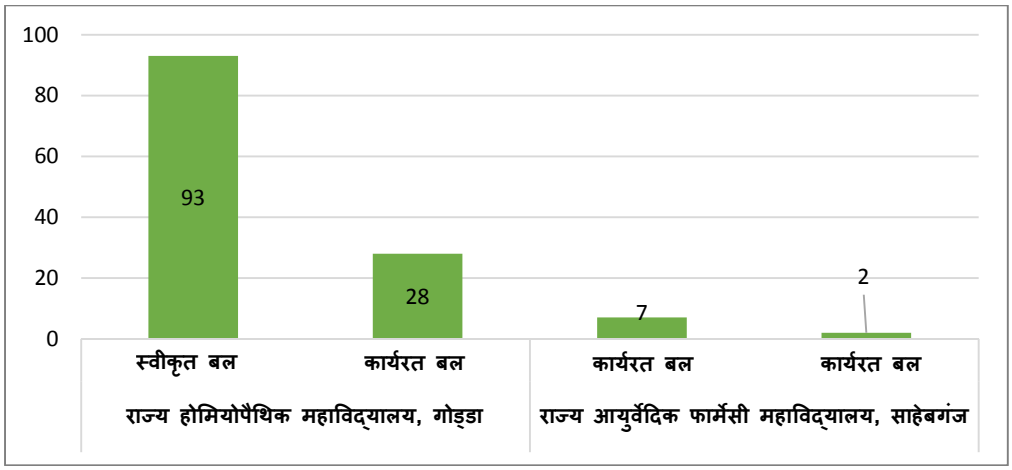

तालिका 2.14 से देखा जा सकता है कि शिक्षकों की कमी 60 और 65 प्रतिशत के बीच थी। होम्योपैथिक कॉलेज में पैरामेडिक्स और स्टाफ नर्सों की कमी क्रमशः 71 और 87 प्रतिशत थी, जबकि फार्मेसी कॉलेज में कोई पैरामेडिक्स उपलब्ध नहीं था। शिक्षकों और चिकित्सा कर्मचारियों की कमी का इन संस्थानों के कामकाज पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा। विभाग ने तथ्यों की पुष्टि करते हुए कहा (मार्च 2023) कि आयुष महाविद्यालयों और अस्पतालों के कामकाज के लिए शैक्षणिक कर्मचारियों, स्टाफ नर्स और पैरामेडिक्स की भर्ती के लिए कार्रवाई की जा रही है।

2.5.2 औषधालयों में एमओ/कर्मचारियों की कमी

राज्य में, जिलों में, 24 जिला संयुक्त आयुष औषधालय और निचले स्तर पर 267 औषधालय[15] थे। प्रत्येक औषधालय के लिए चिकित्सा अधिकारी (एमओ) और कंपाउंडर के पद स्वीकृत थे। मार्च 2022 तक स्वीकृत बल, कार्यरत बल और रिक्ति का विवरण **तालिका 2.15** में दिया गया है।

[15] आयुर्वेदिक: 163, होम्योपैथिक: 72 और यूनानी: 32।

तालिका 2.15: औषधालयों में एमओ और सहायक कर्मचारियों के स्वीकृत बल और कार्यरत बल

पद	स्वीकृत पद	कार्यरत बल	रिक्ति (प्रतिशत)
जिला आयुष चिकित्सा पदाधिकारी (एमओ)	24	5	19 (*79*)
आयुर्वेदिक एमओ	247	29	218 (*88*)
होमियोपैथिक एमओ	155	9	146 (*94*)
युनानी एमओ	86	2	84 (*98*)
आयुर्वेदिक कंपाउंडर	147	22	125 (*85*)
होमियोपैथिक कंपाउंडर	96	19	77 (80)
युनानी कंपाउंडर	56	16	40 (*71*)

(स्रोत: आयुष निदेशालय द्वारा दी गई सूचना)

चार्ट 2.5: झारखण्ड के आयुष औषधालयों में मानव संसाधन की स्थिति

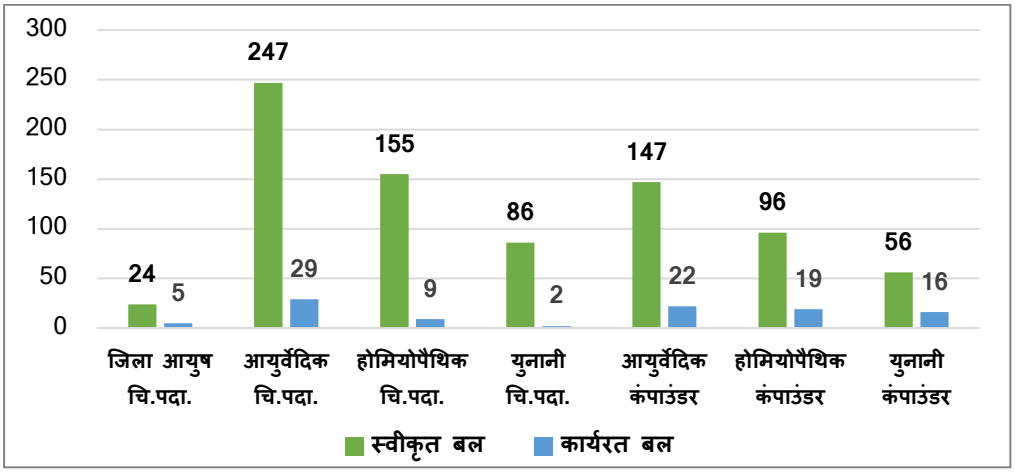

तालिका 2.15 से देखा जा सकता है कि आयुष औषधालयों में एमओ और कंपाउंडरों की कमी 71 से 98 प्रतिशत के बीच थी। इसमें नमूना-जाँचित जिलों में 19 एमओ (79 प्रतिशत) और 15 कम्पांउडर (83 प्रतिशत) की कमी भी शामिल है, जैसा कि **तालिका 2.16** में बताया गया है।

तालिका 2.16: मार्च 2022 तक नमूना-जाँचित जिला संयुक्त आयुष औषधालयों में एमओ और कंपाउंडरों के स्वीकृत बल और कार्यरत बल

जिला	जिला आयुष चिकित्सा पदाधिकारी	आयुर्वेदिक चिकित्सा पदाधिकारी	होमियोपैथिक चिकित्सा पदाधिकारी	युनानी चिकित्सा पदाधिकारी	कंपाउंडर
स्वीकृत बल	**1**	**1**	**1**	**1**	**3**
धनबाद	0	0	0	0	2
दुमका	0	0	0	0	0
गढवा	1	1	0	0	0
गुमला	0	0	0	0	0
सरायकेला-खरसावाँ	0	1	1	0	1
सिमडेगा	1	0	0	0	0
कार्यरत बल	2	2	1	0	3

(स्रोत: आयुष निदेशालय द्वारा दी गई जानकारी)

रंग कोड: हरा = उपलब्ध, लाल = उपलब्ध नहीं

तालिका 2.16 से देखा जा सकता है कि नमूना-जाँचित किसी भी जिला संयुक्त आयुष औषधालय में यूनानी एमओ उपलब्ध नहीं थे। एमओ और कंपाउंडर्स की कमी ने आयुष संकाय के विकास को प्रभावित किया।

2.6 स्वास्थ्य और कल्याण केन्द्र में मानव संसाधनों की उपलब्धता

स्वास्थ्य और कल्याण केन्द्र के परिचालन मार्गदर्शिका यह निर्धारित करते हैं कि एचएससी से उत्क्रमित किए गए एचडब्ल्यूसी को अच्छी तरह सुसज्जित करने और प्रशिक्षित स्वास्थ्य देखभाल टीम द्वारा स्टाफ रखने की आवश्यकता थी, जिसमें सामुदायिक स्वास्थ्य अधिकारी (सीएचओ) के नेतृत्व में बहुउद्देश्यीय श्रमिक (एमपीडब्ल्यू) शामिल हो। नमूना-जाँचित एचडब्ल्यूसी में मानव बल की उपलब्धता **तालिका 2.17** और **चार्ट 2.6** में दिखाई गई है।

तालिका 2.17: मार्च 2022 तक नमूना-जाँचित एचडब्ल्यूसी में मानव बल की उपलब्धता

जिला	नमूना-जाँचित एचडब्ल्यूसी की संख्या	सीएचओ			एमपीडब्लु		
		स्वीकृत बल	कार्यरत बल	रिक्ति	स्वीकृत बल	कार्यरत बल	रिक्ति
धनबाद	3	3	3	00	6	0	6 (*100*)
दुमका	6	6	6	00	12	2	10 (*83*)
गढवा	4	4	2	02	8	0	8 (*100*)
गुमला	5	5	5	00	10	2	8 (*80*)
सरायकेला-खरसावाँ	3	3	3	00	06	3	3 (*50*)
सिमडेगा	4	4	4	00	08	2	6 (*75*)
कुल	**25**	**25**	**23**	**02**	**50**	**9**	**41 (*82*)**

(स्रोत: नमूना-जाँचित एचडब्ल्यूसी द्वारा दी गई सूचना।)

रंग कोड: लाल=अत्यंत खराब (कमी>60%), पीला=बहुत खराब (60%≤कमी≤40%), हरा=अच्छा (कमी<40%)

चार्ट 2.6: मार्च 2022 तक नमूना-जाँचित जिलों में एचडब्ल्यूसी में बहुउद्देशीय श्रमिकों की स्थिति

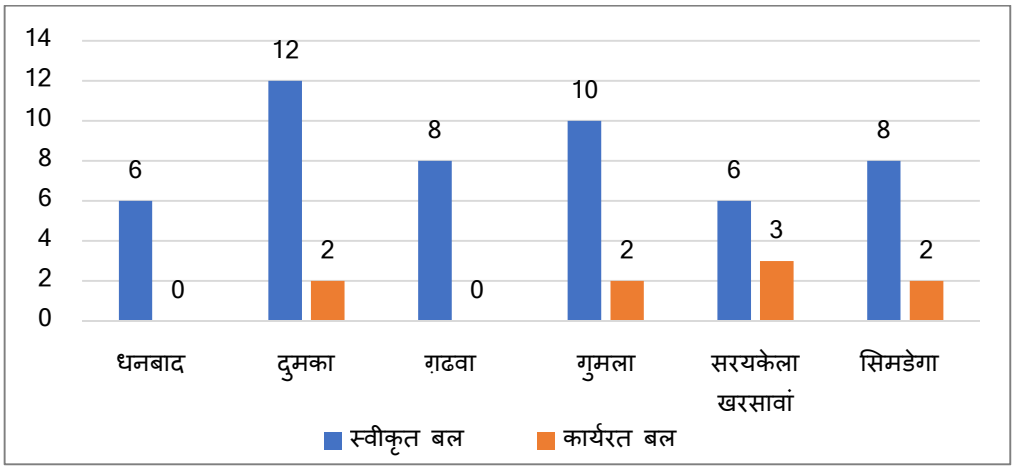

तालिका 2.17 से यह देखा जा सकता है कि नमूना-जाँचित एचडब्ल्यूसी में बहुउद्देशीय श्रमिकों के संवर्ग में कुल मिलाकर 82 प्रतिशत रिक्तियां थीं। बहुउद्देशीय श्रमिकों की अनुपलब्धता ने एचडब्ल्यूसी में नैदानिक सेवाओं को प्रदान करने में प्रतिकूल प्रभाव

डाला, जैसा कि **अध्याय 4** में चर्चा की गई है। विभाग ने तथ्यों की पुष्टि करते हुए कहा (मार्च 2023) कि मानदंड के अनुसार एचडब्ल्यूसी के कामकाज में सुधार लाने के लिए कार्रवाई की जा रही है।

अनुशंसा: राज्य सरकार सभी स्वास्थ्य केन्द्रों में एमओ/ विशेषज्ञों, स्टाफ नर्सों और पैरामेडिक्स की कमी को दूर कर सकती है।